
● सत्रीय कार्य (Sessional Work)

विषय : मापन व मूल्यांकन का अर्थ एवं परिभाषा

पाठ्यक्रम : बी.एड / डी.एल.एड

छात्र का नाम : _____

विषय : शिक्षा मूल्यांकन एवं मापन

शिक्षक का नाम : _____

● भूमिका (Introduction)

शिक्षा के क्षेत्र में मापन और मूल्यांकन का बहुत महत्व है।

किसी भी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की सफलता या असफलता का निर्धारण मापन और मूल्यांकन के माध्यम से ही किया जाता है।

मापन केवल अंकों में किसी उपलब्धि को व्यक्त करता है, जबकि मूल्यांकन उस उपलब्धि का गुणात्मक विश्लेषण कर उसे सार्थकता प्रदान करता है।

इस प्रकार दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं और शिक्षण की प्रभावशीलता के लिए आवश्यक उपकरण हैं।

● मापन का अर्थ (Meaning of Measurement)

शिक्षा में मापन (Measurement) का अर्थ है —

छात्र के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण या व्यवहार को किसी निश्चित मानक के आधार पर संख्या या अंकों में व्यक्त करना।

अर्थात् मापन एक मात्रात्मक प्रक्रिया (Quantitative Process) है जिसके माध्यम से हम यह जान पाते हैं कि विद्यार्थी ने कितना सीखा या किसी विशेष क्षेत्र में उसकी क्षमता कितनी है।

उदाहरण

यदि किसी छात्र ने गणित परीक्षा में 80 अंक प्राप्त किए हैं, तो यह उसका मापन है। यह केवल संख्यात्मक रूप में उसकी उपलब्धि को दर्शाता है।

● मापन की परिभाषाएँ (Definitions of Measurement)

1. थॉरोन (Thorndike) —

“Measurement is the assigning of numerals to objects or events according to rules.”

(मापन वस्तुओं या घटनाओं को निश्चित नियमों के अनुसार अंकों में व्यक्त करने की प्रक्रिया है।)

2. गिल्फोर्ड (Guilford) —

“Measurement means the numerical description of an individual's performance.”

(मापन का अर्थ व्यक्ति की कार्य-प्रदर्शन को अंकों के रूप में व्यक्त करना है।)

3. टायलर (Tyler) —

“Measurement is limited to quantitative description of pupil's behavior.”

(मापन छात्र के व्यवहार का मात्रात्मक वर्णन मात्र है।)

● मूल्यांकन का अर्थ (Meaning of Evaluation)

मूल्यांकन (Evaluation) मापन से एक कदम आगे की प्रक्रिया है।

यह केवल अंक देने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि उन अंकों के आधार पर निर्णय लेना है

—

कि विद्यार्थी ने अपेक्षित शिक्षण उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया है।

अर्थात् मूल्यांकन एक गुणात्मक (Qualitative) और न्यायिक (Judgmental) प्रक्रिया है।

यह यह निर्धारित करता है कि प्राप्त परिणाम कितने उपयोगी हैं और उनका क्या शैक्षिक मूल्य है।

● मूल्यांकन की परिभाषाएँ (Definitions of Evaluation)

1. टायलर (Ralph W. Tyler) —

“Evaluation is the process of determining the extent to which the educational objectives are being realized.”

(मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा यह निर्धारित किया जाता है कि शैक्षिक

उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है।)

2. क्रोनबैक (Cronbach) —

“Evaluation is the systematic collection and interpretation of evidences leading to a judgment of value.”

(मूल्यांकन तथ्यों का व्यवस्थित संग्रह और उनके अर्थ निकालने की वह प्रक्रिया है जिससे किसी मूल्य का निर्णय किया जा सके।)

3. ग्रोनलुंड (Gronlund) —

“Evaluation is a systematic process of collecting, analyzing, and interpreting information to determine the extent to which pupils have achieved the objectives.”

(मूल्यांकन सूचना को एकत्रित, विश्लेषण एवं व्याख्या करने की एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जिससे छात्रों की उद्देश्यों की प्राप्ति की सीमा ज्ञात हो सके।)

● मापन और मूल्यांकन में अंतर (Difference between Measurement and Evaluation)

क्रमांक	मापन (Measurement)	मूल्यांकन (Evaluation)
क		

- | | | |
|----|--|---|
| 1. | मात्रात्मक प्रक्रिया है। | गुणात्मक एवं न्यायिक प्रक्रिया है। |
| 2. | यह केवल अंक या संख्या बताता है। | यह उन अंकों का अर्थ और महत्व बताता है। |
| 3. | ‘क्या’ और ‘कितना’ सीखा गया, यह बताता है। | ‘कैसे’ और ‘क्यों’ सीखा गया, यह समझाता है। |
| 4. | मापन मूल्यांकन का एक भाग है। | मूल्यांकन एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें मापन सम्मिलित है। |
| 5. | उद्देश्य केवल परिणाम बताना है। | उद्देश्य निर्णय लेना एवं सुधार करना है। |

● शिक्षा में मापन और मूल्यांकन का महत्व (Importance of Measurement and Evaluation in Education)

1. शिक्षण की प्रभावशीलता ज्ञात करना —

मापन व मूल्यांकन से शिक्षक यह जान पाता है कि उसका शिक्षण कितना प्रभावी है।

2. विद्यार्थियों की प्रगति का निर्धारण —

इससे यह पता चलता है कि विद्यार्थी कितनी प्रगति कर रहे हैं और कहाँ सुधार

की आवश्यकता है।

3. शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति का परीक्षण —

मूल्यांकन से यह निर्धारित होता है कि शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति किस हद तक हुई है।

4. शिक्षण विधियों में सुधार —

मूल्यांकन के परिणामों के आधार पर शिक्षक अपनी शिक्षण विधियों में आवश्यक परिवर्तन कर सकता है।

5. विद्यार्थी की आत्म-मूल्यांकन क्षमता विकसित करना —

जब विद्यार्थी अपने प्रदर्शन का विश्लेषण करता है तो उसमें आत्म-सुधार की भावना उत्पन्न होती है।

● निष्कर्ष (Conclusion)

मापन और मूल्यांकन शिक्षा की आत्मा हैं।

जहाँ मापन केवल “अंकों का विवरण” है, वहीं मूल्यांकन “अंकों के अर्थ और उपयोगिता” को बताता है।

दोनों की सहायता से शिक्षक न केवल विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता को समझ पाता है,

बल्कि शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और परिणाममुखी बना सकता है।
इसलिए कहा जा सकता है कि —
“शिक्षा बिना मूल्यांकन के अधूरी है।”

संदर्भ (References)

1. टायलर, आर. डब्ल्यू. — Basic Principles of Curriculum and Instruction
 2. ग्रोनलुंड, एन. ई. — Measurement and Evaluation in Teaching
 3. ब्लूम, बेंजामिन एस. — Taxonomy of Educational Objectives
 4. शिक्षा मापन एवं मूल्यांकन — डॉ. पी.के. यादव
 5. https://telegram.me/rlk_classes
-

● सत्रीय कार्य (Sessional Work)

विषय : आंकलन के सिद्धांत (Principles of Evaluation)

पाठ्यक्रम : बी.एड / डी.एल.एड

विषय : शिक्षा मापन एवं मूल्यांकन

छात्र का नाम : _____

शिक्षक का नाम : _____

● भूमिका (Introduction)

शिक्षा के क्षेत्र में आंकलन (Evaluation) का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है।

यह शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की रीढ़ की हड्डी के समान है, क्योंकि इसके माध्यम से हम यह निर्धारित करते हैं कि शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है।

आंकलन केवल अंक देना नहीं है, बल्कि यह एक समग्र प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी के ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और व्यवहार का मूल्यांकन किया जाता है।

किसी भी अच्छे मूल्यांकन की सफलता उसके सिद्धांतों के उचित पालन पर निर्भर करती है।

● आंकलन का अर्थ (Meaning of Evaluation)

आंकलन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें किसी व्यक्ति, वस्तु या क्रिया का मूल्य निर्धारित किया जाता है।

शिक्षा में आंकलन का अर्थ है —

छात्र की सीखने की उपलब्धियों, क्षमताओं और व्यवहार का विश्लेषण कर यह जानना कि शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति कितनी हुई है।

अर्थात् —

“Evaluation is the process of determining the extent to which educational objectives are achieved.”

● आंकलन के उद्देश्य (Objectives of Evaluation)

1. शिक्षण की प्रभावशीलता का पता लगाना।
 2. विद्यार्थियों की प्रगति का मूल्यांकन करना।
 3. शिक्षण विधियों एवं पाठ्यक्रम की उपयोगिता की जाँच करना।
 4. विद्यार्थियों में आत्म-मूल्यांकन की भावना उत्पन्न करना।
 5. शिक्षण प्रक्रिया को सुधारने के लिए आवश्यक फीडबैक प्रदान करना।
-

● आंकलन के सिद्धांत (Principles of Evaluation)

आंकलन को प्रभावी, विश्वसनीय और निष्पक्ष बनाने के लिए कुछ प्रमुख सिद्धांतों का पालन आवश्यक है।

ये सिद्धांत शिक्षक को दिशा प्रदान करते हैं ताकि वह विद्यार्थियों के वास्तविक विकास का समग्र मूल्यांकन कर सके।

● 1. स्पष्ट उद्देश्य का सिद्धांत (Principle of Definite Objectives)

मूल्यांकन तभी सफल हो सकता है जब उसके उद्देश्य स्पष्ट हों।
शिक्षक को यह पता होना चाहिए कि वह क्या आंकना चाहता है —
ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, कौशल या दृष्टिकोण।
अस्पष्ट उद्देश्यों के कारण मूल्यांकन का परिणाम सही नहीं आ पाता।

● 2. समग्रता का सिद्धांत (Principle of Comprehensiveness)

मूल्यांकन केवल बौद्धिक (Intellectual) क्षेत्र तक सीमित नहीं होना चाहिए,
बल्कि यह छात्र के शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, और नैतिक विकास को भी
शामिल करे।
अर्थात् मूल्यांकन विद्यार्थी के *समग्र व्यक्तित्व विकास* को मापे।

● 3. निरंतरता का सिद्धांत (Principle of Continuity)

आंकलन एक सतत (Continuous) प्रक्रिया है।
यह केवल परीक्षा के समय ही नहीं बल्कि पूरे शिक्षण सत्र के दौरान किया जाना
चाहिए।
निरंतर आंकलन से शिक्षक को विद्यार्थी की प्रगति का सही चित्र प्राप्त होता है।

यही विचार CCE (Continuous and Comprehensive Evaluation) में भी अपनाया गया है।

● 4. निष्पक्षता का सिद्धांत (Principle of Objectivity)

आंकलन में व्यक्तिगत भावनाएँ या पक्षपात नहीं होना चाहिए।

मूल्यांकन तथ्यपरक और वस्तुनिष्ठ (Objective) होना चाहिए।

सभी विद्यार्थियों के लिए समान मानदंड और नियम लागू होने चाहिए।

● 5. विश्वसनीयता का सिद्धांत (Principle of Reliability)

मूल्यांकन के परिणाम हर बार एक जैसे आने चाहिए।

यदि एक ही विद्यार्थी को अलग-अलग समय पर या अलग व्यक्ति द्वारा मूल्यांकित किया जाए,

तो परिणामों में अधिक अंतर नहीं होना चाहिए।

इससे आंकलन की विश्वसनीयता बढ़ती है।

● 6. वैधता का सिद्धांत (Principle of Validity)

मूल्यांकन वही मापे जो उसे मापना चाहिए।

यदि हम भाषा कौशल का आंकलन कर रहे हैं तो प्रश्न उसी से संबंधित होने चाहिए।

अन्यथा मूल्यांकन वैध नहीं माना जाएगा।

● 7. व्यावहारिकता का सिद्धांत (Principle of Practicability)

मूल्यांकन की प्रक्रिया इतनी जटिल नहीं होनी चाहिए कि उसे करना कठिन हो जाए।

यह समय, संसाधन और परिस्थितियों के अनुसार व्यावहारिक होनी चाहिए ताकि शिक्षक आसानी से कर सके।

● 8. लचीलापन का सिद्धांत (Principle of Flexibility)

मूल्यांकन की प्रक्रिया लचीली होनी चाहिए ताकि जरूरत पड़ने पर शिक्षक इसे विद्यार्थियों की स्थिति, विषय और उद्देश्य के अनुसार बदल सके।

● 9. प्रेरणा का सिद्धांत (Principle of Motivation)

मूल्यांकन विद्यार्थियों में सीखने की रुचि और उत्साह बढ़ाए।
ऐसे प्रश्न और गतिविधियाँ शामिल हों जो उन्हें सकारात्मक प्रतिस्पर्धा के लिए प्रेरित करें।

● 10. नैतिकता और गोपनीयता का सिद्धांत (Principle of Ethics and Confidentiality)

मूल्यांकन के परिणामों को गोपनीय रखा जाना चाहिए और किसी विद्यार्थी का मज़ाक या अपमान नहीं होना चाहिए।
शिक्षक को निष्पक्ष और नैतिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

● 11. प्रतिक्रिया का सिद्धांत (Principle of Feedback)

मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य सुधार है, दंड नहीं।
इसलिए विद्यार्थियों को नियमित रूप से *Feedback* दी जानी चाहिए ताकि वे अपनी गलतियों को समझकर सुधार कर सकें।

● आंकलन के सिद्धांतों का शैक्षिक महत्व (Educational Importance)

1. यह शिक्षक को शिक्षण विधि में सुधार करने में मदद करते हैं।
2. विद्यार्थियों की कमजोरियों और क्षमताओं का सही पता चलता है।
3. शिक्षा प्रक्रिया में निष्पक्षता और पारदर्शिता आती है।
4. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहन मिलता है।
5. सीखने की निरंतरता और प्रगति सुनिश्चित होती है।

● निष्कर्ष (Conclusion)

आंकलन के सिद्धांत शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को बनाए रखने का आधार हैं।

यदि शिक्षक इन सिद्धांतों का पालन करते हैं तो मूल्यांकन केवल परीक्षा न रहकर एक “सुधार की प्रक्रिया” बन जाता है।

इससे न केवल विद्यार्थी का बल्कि सम्पूर्ण शिक्षण-अधिगम प्रणाली का विकास होता है।

अतः कहा जा सकता है —

“सही आंकलन ही सही शिक्षा का दर्पण है।”

संदर्भ (References)

1. ब्लूम, बेंजामिन एस. — *Taxonomy of Educational Objectives*
 2. ग्रीनलुंड, एन. ई. — *Measurement and Evaluation in Teaching*
 3. टायलर, आर. डब्ल्यू. — *Basic Principles of Curriculum and Instruction*
 4. शिक्षा मापन एवं मूल्यांकन — डॉ. पी. के. यादव
 5. https://telegram.me/rlk_classes
-